ममतामयी निरंकारी माता सविन्दर हरदेव जी
साकार से निराकार -एक दिव्य सफर

"अनेकता में एकता" का सूत्र प्रदान करने एवं सम्पूर्ण धरा पर बसने वाले इन्सानों के लिए सुख-समृद्धि, आनन्द की स्थापना के लिए प्रयासरत सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज १७ मई, २०१६ को संत निरंकारी मिशन के पाँचवें सद्गुरु के रुप में प्रकट हुई | उल्लेखनीय है कि मातृशक्ति के रुप में सद्गुरु की अमोघ शक्ति प्रकट होने का पहला सौभाग्य आप को प्राप्त हुआ |

संत निरंकारी मिशन के लिए वह समय अत्यंत प्रतिकूल था क्योंकि मानवता एवं विश्वशांति के मसिहा युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह जी महाराज १३ मई को अमेरिका में मॉन्ट्रीयल के करीब एक कार दुर्घटना में अपने नश्वर शरीर को त्याग कर निराकार रुप में विलीन हो चुके थे | एक प्रकार से सम्पूर्ण निरंकारी जगत अपने आप को अनाथ एवं निराधार महसूस कर रहा था | भावनात्मक रुप से विचलित एवं अनिश्चय की स्थिति में था | ऐसी स्थिति में सभी भक्तों को धीरज एवं मार्गदर्शन देने के लिए सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा अपने जीवन काल में ही दिए गए पूर्व संकेतानुसार सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज ने मिशन की बागडोर सम्भाली | हालांकि उस समय आपकी प्रकृति इतनी अच्छी नहीं थी लेकिन साध संगत का आधार बनने और मानवता का कल्याण करने के लिए आपने अपना स्वास्थ्य दांव पर लगाते हुए मिशन का नेतृत्व करना स्वीकार किया |

ऐसी असाधारण स्थिति में आपने अपनी अलौकिक दिव्य-वाणी से मानव-मात्र को अपने पहले ही सम्बोधन में कहा कि कुछ भी हो बस प्यार ही प्यार हो | आज हम सब मिल कर यह कसम खायें कि जैसे बाबा जी चाहते थे, हम मिल-जुलकर सबके साथ प्यार से आगे बढ़ें और इस मिशन को आगे से आगे पहुंचाएं |

सद्गुरु माता जी के सद्गुरु रुप में प्रकट होते ही पूरा निरंकारी जगत आश्वस्त हुआ | सबके दिलों में ठंडक आ गई | भविष्य की चिंतायें मिट गई | क्योंकि भक्ति के लिए तथा भक्तों के लिए साक्षात साकार सद्गुरु का होना अनिवार्य होता है | एक तरफ सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के पार्थिव शरीर के दर्शन करते हुए भक्तों की आँखें नम हो रही थी तो दूसरी तरफ सद्गुरु माता जी के प्रकट होने से दिलों में खुशी भी महसूस हो रही थी | ऐसा अद्भुत दृश्य १७ मई, २०१६ के दिन देखने को मिला |

सद्गुरु रुप में प्रकट होने के बाद अक्तूबर २०१६ में अपनी पहली कल्याण यात्रा के दौरान आपने चण्डीगढ़ तथा करनाल (हरियाणा) के श्रद्धालुओं को दर्शन दिए | उसके बाद पिछले दो वर्षों के कालखंड में आपने महाराष्ट्र, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, सिक्किम आदि राज्यों की कल्याण यात्रायें की | इसी दौरान आपने दूर-देशों की कल्याण यात्रा के अन्तर्गत नेपाल, अमेरिका, कनाडा, यू.के. तथा खाड़ी देशों में बसे भक्तजनों को भी अपने दिव्य-दर्शनों से कृतार्थ किया |

सद्गुरु माता जी ने ६९वें और ७० वें वार्षिक निरंकारी सन्त समागमों की दिव्य रहनुमाई की तथा विश्व भर से आये श्रद्धालु भक्तों को अपना पावन आशीर्वाद प्रदान किया | सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा रचित "सम्पूर्ण हरदेव बाणी" कालाभ मानव-मात्र को उपलब्ध कराने के लिए, आपने उसे प्रकाशित करवाकर ७०वें वार्षिक सन्त-समागम के अवसर पर मानव समाज को अर्पित किया |

दिल्ली के इन समागमों के अलावा जनवरी, २०१७ में महाराष्ट्र का ५०वाँ तथा जनवरी, २०१८ में महाराष्ट्र का ५१वाँ वार्षिक सन्त समागम आपके पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ | उत्तर-पूर्वी राज्यों के कोलकत्ता और सिलीगुड़ी में दो सन्त समागम भी आपकी पावन अध्यक्षता में आयोजित किए गए | इन समागमों में आपने जहां मानव मात्र को प्रेम-शान्ति का सन्देश दिया वहां भक्तों को भरपूर आशीर्वाद प्रदान किए | उसके बाद उत्तर प्रदेश का राज्यस्तरीय समागम भी वाराणसी में सद्गुरु माता जी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ | वर्ष २०१८ के दोनों भक्ति पर्व समागम संत निरंकारी आध्यात्मिक परिसर, समालखा में आपके ही पावन सान्निध्य में आयोजित किए गए |

१४ जनवरी, २०१८ को हरियाणा में जी.टी.करनाल रोड स्थित सन्त निरंकारी आध्यात्मिक स्थल, समालखा में आयोजित भक्ति पर्व समागम के अवसर पर इस स्थान को समागम स्थल के रुप में विकसित करने के लिए एवं सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा बनाये गए प्रारुप को मूर्त रुप देने के लिए, आपने इस स्थल पर विधिवत निर्माण कार्य का शुभारम्भ किया |

जीवन परिचय

माता सविन्दर जी का जन्म १२ जनवरी, १९५७ को यमुनानगर (हरियाणा) निवासी श्री मनमोहन सिंह जी एवं श्रीमती अमृत कौर जी के परिवार में हुआ | आपका लालन-पालन फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) निवासी श्री गुरमुख सिंह आनन्द जी और श्रीमती मदन कौर जी ने किया, जिन्होंने बचपन में ही आपको गोद ले लिया था | माता सविन्दर जी को बाल्यावस्था से ही पूज्य मदन कौर जी और श्री गुरमुख सिंह जी का ममत्व और स्नेह प्राप्त हुआ |

माता सविन्दर जी की प्रारम्भिक शिक्षा फर्रुखाबाद में ही हुई | तत्पश्चात सन १९६६ में आपने आगे की शिक्षा जीजस एण्ड मेरी कान्वेंट स्कूल, मसूरी (उत्तराखण्ड) से ग्रहण की | सन १९७३ में आपने सिनियर सैकण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण की | उच्च शिक्षा आपने दिल्ली के दौलतराम कॉलेज से प्राप्त की |

१४ नवम्बर, १९७५ को आपका विवाह निरंकारी बाबा गुरबचनसिंह जी तथा निरंकारी राजमाता कुलवंत कौर जी के सुपुत्र श्री हरदेव सिंह जी के साथ निरंकारी पद्धती से सादा रुप में संपन्न हुआ | आपकी तीन सुपुत्रियां हैं – समता जी, रेणुका जी एवं सुदीक्षा जी | तीनों का लालन-पालन आपने अपनी ममता की छाँव में पूर्ण जिम्मेदारी के साथ किया और गृहस्थी के सभी उत्तरदायित्वों को भलीभाँति निभाया |

विवाहोपरान्त वर्ष १९७५ एवं १९७६ में आप अपने पति श्री हरदेव सिंह जी के साथ, बाबा गुरबचन सिंह जी एवं निरंकारी राजमाता जी द्वारा की गई विश्व कल्याण यात्राओं में सहभागी रहीं | इस यात्रा में कुवैत, इराक, थाईलैण्ड, हांगकांग, कनाडा, यू.एस.ए., ऑस्ट्रिया एवं यू.के. देश सम्मिलित थे |

वर्ष १९८० में युगप्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी के ब्रह्मलीन होने के उपरान्त उस समय के विपरीत एवं चुनौतिपूर्ण वातावरण में आपके पति श्री हरदेव सिंह जी को सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर सौंपी गई | तभी से साध संगत ने आपको "पूज्य माता सविन्दर जी" के नाम से सम्बोधित करना आरंभ किया | बाबा हरदेव सिंह जी के कार्य काल में पूज्य माता जी लगातार ३६ वर्ष बाबा जी के साथ कंधे से कंधा मिला कर इस मिशन के प्रचार-प्रसार में योगदान देते रहे | वे बाबा जी तथा राजमाता जी के साथ सद्गुरु के मंच पर सुशोभित होते और साध संगत को भरपूर आशीर्वाद प्रदान करते | बाबा जी की शायद ही कोई देश तथा दूर देशों की कल्याण यात्रा होगी जिसमें माता जी साथ न रहे हों | पूज्य माता जी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज को पहले सद्गुरु माना और अपने पारिवारिक संबंधों को पीछे रखा |

आपके हृदय में दया और करुणा का भाव सदैव प्रबल रहा | आप सभी को सहनशीलता का पाठ पढ़ाती रहीं | खामोश रह कर गुरु भक्ति की प्रेरणा देते रहना आपका स्वभाव था | इसी स्वभाव के कारण आप सदैव हर गुरसिख-सेवादार का हर प्रकार से ध्यान रखती थीं | पूज्य माता जी के हृदय में बच्चों के प्रति बेहद प्यार और दुलार था | अपना ममत्व लुटाने के लिए यह दिव्य-विभूति हर समय तत्पर रहती थी तथा गुरसिखों के जीवन को सुन्दर और आदर्श रुप में देखना चाहती थी | आपने अपने स्वास्थ्य की परवाह न करते हुए हर समय अपने आप को साध संगत और सन्तों के बीच रखने का प्रयास किया |

सामाजिक सेवाओं में योगदान

आध्यात्मिक कार्यक्रमों के साथ-साथ सद्गुरु माता जी ने मानव सेवा के कार्यों की ओर भी पूरा ध्यान दिया | फरवरी २०१७ में गुरु पूजा दिवस के अवसर पर संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में देश के २६३ बड़े रेलवे स्टेशनों की सफाई की गई | इसी प्रकार २०१८ में इसी दिन देश के २७५ बड़े शहरों में ६३५ सरकारी अस्पतालों की सफाई की गई |

विश्व पर्यावरण दिवस, ५ जून, २०१७ को फाउंडेशन के तत्वावधान में ८ ऐसे पर्वतीय स्थलों पर पौधे लगाये गये और सफाई की गई जहां ग्रीष्म ऋतू में पर्यटक भारी संख्या में आते हैं | इसी दिन इस वर्ष २०१८८ में देश के ७ राज्यों में १४ पर्वतीय स्थलों पर यह अभियान चलाया गया | इनके अलावा टाईम्स ऑफ इंडिया तथा एन.डी.टी.वी. के पौधारोपण तथा सफाई अभियानों में मिशन के भक्तों ने उल्लेखनीय योगदान दिए |

माता सविंदर हरदेव जी महाराज की प्रेरणा से २०१७-१८ में ५१४ रक्तदान शिविर आयोजित किये गए जो कि अपने आप में एक रिकार्ड था | इनमें ८३,३४१ यूनिट रक्तदान किया गया | इसी प्रकार मानव एकता दिवस, २४ अप्रैल, २०१८ को, एक ही दिन में ८४ रक्तदान शिविर आयोजित किये गये जहां १९,३०७ यूनिट रक्तदान किया गया |

माता सविन्दर जी हर क्षेत्र में महिलाओं को सक्षम बनाने के लिए प्रयासरत रहीं | समाज कल्याण कार्यों में जहां आपकी रुचि रही वहीं आप वृक्षारोपण व स्वच्छता अभियान एवं सिलाई-कढ़ाई केन्द्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बहनों के प्रति भी अपनत्व का भाव रखतीं | जेलों में कैदियों के जीवन में सुधार एवं आध्यात्मिक रुप से जाग्रत करने के लिए आप प्रयासरत रहतीं थी जिसके परिणामस्वरुप आज तिहार जेल, ठाणे जेल, तलोजा जेल तथा येरवडा जेल आदि स्थानों में संत निरंकारी मिशन के आध्यात्मिक सत्संग कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है | सद्गुरु बाबा जी के कार्यकाल में सन्त समागमों के दौरान अपने व्यस्त समय से समय निकाल कर आप अनाथालयों कों भेंट करते और फल तथा कम्बल आदि सामग्री का वितरण करते | सन्त समागमों में श्रद्धालु भक्तों को आप अपने हाथ से भक्तों को दूध पिलाते रहे |

अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज के आध्यात्मिक तथा मानव कल्याण के लिये किये गये योगदान की सराहना करते हुए लाईफ काइरोप्रेक्टिक कॉलेज वेस्ट संस्था (अमेरिका) द्वारा माता जी को "सर्विस टू ह्यूमेनिटी अवार्ड २०१७" द्वारा सम्मानित किया गया | इसी प्रकार से अमेरिका स्थित एक

अन्तरराष्ट्रीय संस्था "वी केयर फार ळयूमेनिटी(द्वारा उन्हें २०१८ के लिए सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक विभूति का सम्मान प्रदान किया गया |

सद्गुरु रुप में सुदीक्षा जी को घोषित किया

सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी ने परम पूज्य सुदीक्षा जी को १६ जुलाई, २०१८ को सद्गुरु की जिम्मेदारी सौप कर उस इतिहास को दोहराया जो मिशन के द्वितिय सद्गुरु बाबा अवतार सिंह जी ने रचा था | उन्होंने अपने जीवन काल में ही बाबा गुरबचन सिंह जी को गुरुगद्दी सौंपने की परम्परा बनाई थी जिसे माता सविन्दर जी ने पुन: एक बार दोहराया | १७ जुलाई, २०१८ को एक विशाल सत्संग समारोह में सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी ने पूज्य सुदीक्षा जी के मस्तक पर तिलक लगाकर सद्गुरु के पवित्र आसन पर विराजमान किया तथा सद्गुरु की आध्यात्मिक शक्तियों का प्रतीक सफेद दुपट्टा उनके गले में पहनाया | इस प्रकार मानवता के इस मिशन को आगे बढ़ाने का पूरा पूरा प्रबंध आपने अपने जीवन काल में ही कर दिया |

साकार से निराकार

पूज्य माता सविन्दर जी का स्वास्थ्य कुछ समय से ठीक नहीं चल रहा था | ५ अगस्त, २०१८ को आप अपने नश्वर शरीर का त्याग कर निरंकार में लीन हो गए | आपका पार्थिव शरीर निरंकारी चौक के समीप ग्राउण्ड नं.८ में ७ अगस्त की रात तक अन्तिम दर्शनार्थ रखा गया, जहाँ देश-दूर देश से आए लाखों श्रद्धालु-भक्तों ने आपको नम आँखों से भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की | इसके बाद ८ अगस्त के दिन बुराड़ी रोड, दिल्ली स्थित ग्राउंड नं.८ से निगम बोध घाट तक आपकी अंतिम यात्रा निकाली गई जिसमें लाखों श्रद्धालु भक्तों ने आपको अत्यंत भक्ति भाव से अन्तिम विदाई दी |

निगम बोध घाट पर सीएनजी दाहिनी में अंतिम संस्कार होने के बाद उसी दिन शाम को ग्राउंड नं.८ में मिशन की वर्तमान सद्गुरु माता सुदीक्षा जी के पावन सान्निध्य में माता सविंदर हरदेवजी महाराज के जीवन एवं शिक्षा से प्रेरणा लेने हेतु प्रेरणा दिवस समारोह के रुप में एक विशाल सत्संग कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें उन्हें न केवल भरपूर श्रद्धाजलि अर्पित की गई बल्कि उनके जीवन तथा शिक्षाओं से प्रेरणा भी ली गई | इस अवसर पर अपने दिव्य उद्बोधन में सद्गुरु माता सुदीक्षा जी ने कहा कि प्रेरणा दिवस पर हम एक ऐसी माँ को याद कर रहे हैं जो न केवल हम तीन बच्चों की माँ थी बल्कि पूरी साध संगत की माँ थी | उन्होंने हमेशा सभी को प्यार तथा स्नेह प्रदान किया |

इस समारोह में अनेक गणमान्य महानुभाव पधारे और माता सविंदर हरदेव जी के प्रति अपनी श्रद्ध व्यक्त की | इनमें दिल्ली के स्वास्थ्य मंत्री श्री सत्येंद्र जैन, हरियाणा के पूर्व मुख्य मंत्री री भूपेंद्र सिंह हूड्डा एवं सांसद श्री मनोज तिवारी का समावेश था | इस अवसर पर सांसद श्री मनोज तिवारी ने कहा कि माता जी के जाने के कारण मिशन को ही नहिं बल्कि पूरे आध्यात्मिक जगत के लिए बहुत बड़ी क्षति पहुँची है | आपने बताया कि माननीय प्रधान मंत्री तथा माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा भी माता जी के देहावसान के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट की हैं | इसी प्रकार देश-विदेशों से अनेक गणमान्य सज्जनों द्वारा माता जी के प्रति संवेदनाएं प्रेषित की गई |

हालांकि माता सविन्दर जी को निरंकारी सद्गुरु के रुप में लगभग २ वर्ष से कुछ अधिक समय तक ही विश्व का मार्गदर्शन करने का अवसर मिला लेकिन वास्तविक रुप में सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के ३६ वर्ष के कार्यकाल में भी आप पूर्णत: उनके साथ मिशन और मानवता का मार्गदर्शन करती रहीं | आपकी सेवा, भक्ति, समर्पण एवं मार्गदर्श्यान सदा-सदा जहाँ मानव मनों में बसा रहेगा, वहीं आध्यात्मिक मार्ग के राहियों को मंजिल तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा |

युग निर्माता सद्गुरु माता, ममता-प्यार का रुप साकार,
मानवता का नमन आपको, शत्-शत् बार, शत्-शत् बार |

प्रस्तुति : स.वि.लव्हटे (नवी मुंबई)